C-9 Assessment for learning

Principle of Evaluation :-

मूल्यांकन के निम्नलिखित सिद्धांत हैं।

(1) उपकरणों का चुनाव :- मूल्यांकन के लिए उपकरणों का चयन उस समय तक नहीं किया जा सकता है जब तक कि उसका उद्देश्य स्पष्ट न हो। उपकरणों का चयन मूल्यांकन के अनुकूल होना चाहिए।

(2) उपकरणों का प्रयोग :- मूल्यांकन के लिए उपकरणों के प्रयोग करते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि उससे हमारे उद्देश्य की पूर्ति हो रही है। मूल्यांकन के लिए अनेक उपकरण उपलब्ध हो सकते हैं, पर उन सबका अपना एक अपना उद्देश्य होता है। अतः मूल्यांकन उपकरणों के प्रयोग अपने निर्धारित उद्देश्यों के अनुरूप ही करना चाहिए।

(3) पूर्ण मूल्यांकन :— किसी व्यक्ति या समूह के पूर्ण मूल्यांकन के लिए विविध विधाओं और उपकरणों का उपयोग करना चाहिए।

(4) मूल्यांकन कर्ता का ज्ञान :— उपकरणों की उपयोगिता का मूल्यांकनकर्ता को पूर्ण ज्ञान होना चाहिए। उनके अच्छा या उत्तम होने के लिए उनके विशेषताओं का ~~होना~~ होना वांछित है।

(5) उच्च लक्ष्यों की प्राप्ति :— मूल्यांकन को अपने आप में उच्च लक्ष्यों की प्राप्ति का माध्यम समझना चाहिए।

(6) नैतिक मूल्य :— मूल्यांकन करते समय मूल्यांकनकर्ता को मूल्यांकन के ~~नैतिक~~ नैतिक मूल्यों का ध्यान में रखना चाहिए।

Evaluation process

मूल्यांकन प्रक्रिया के निम्नलिखित चरण हैं।

(I) उद्देश्यों का निर्धारण :- बालक की सामाजिक स्थिति विषय वस्तु की प्रकृति तथा बौद्धिक स्तर को ध्यान में रखकर उद्देश्य को निर्धारित करना चाहिए। मूल्यांकनकर्ता को यह स्पष्ट रूप में ज्ञात होना चाहिए कि व्यवहार परिवर्तन किस रूप में और किस सीमा तक लाना है। अतः उद्देश्यों के भली प्रकार पहचान लेने और निर्धारित कर लेने पर ही मूल्यांकन की ओर अग्रसर होना चाहिए।

(II) अधिगम अनुभव की योजना बनाना :- एक बार उद्देश्यों को पहचान लेने और उनका निर्धारण कर लेने के पश्चात अधिगम-अनुभव की ओर ध्यान देना चाहिए। अधिगम - अनुभव से तात्पर्य एक ऐसी परिस्थिति का निर्माण करना जिसमें बालक क्रिया कर सके। योजना निर्माण के समय बालक की आयु, लिंग, सामाजिक

पृष्ठ भूमि को ध्यान में रखना चाहिए।

(iii) विभिन्न उपकरणों के माध्यम से योग्यताएँ प्रदान करना :- उद्देश्य एवं अधिगम अनुभव की योजना तैयार हो जाने पर मूल्यांकन कर्ता योग्यताओं को परिभाषित करते हैं। इन योग्यताओं के आधार पर व्यवहार परिवर्तन का मूल्यांकन किया जाता है।

व्यवहार परिवर्तन के क्षेत्र :- बालक के जीवन में आने वाले व्यवहार परिवर्तन, मूल्यांकन के फलस्वरूप ही होते हैं। मूल्यांकन इन व्यवहार परिवर्तनों के लिए एक माध्यम का कार्य करता है। व्यवहार परिवर्तन के निम्नलिखित पक्ष हैं।

(1) ज्ञानात्मक पक्ष :- यह पक्ष ज्ञान के उद्देश्य पर महत्व देता है। इस पक्ष में निम्नलिखित ज्ञान सम्मिलित हैं।

(i) विशेष तथ्यों का ज्ञान
(ii) विशिष्ट तथ्यों को प्राप्त करने की विधियों का ज्ञान
(iii) मान्यताओं एवं ~~प्रवृत्तियों का ज्ञान~~ परम्पराओं का ज्ञान
(iv) मापदण्डों का ज्ञान
(v) सिद्धान्तों का ज्ञान
(vi) घटनाओं का ज्ञान
(vii) विधियों और प्रणालियों का ज्ञान

(2) भावात्मक पक्ष :- इसमें निम्नलिखित पक्ष सम्मिलित है।

(i) ग्रहण करना
(ii) प्रतिक्रिया करना
(iii) अनुमूल्यन
(iv) विचारण
(v) व्यवस्थापन
(vi) चारित्रिकरण।

(3) क्रियात्मक पक्ष :- यह पक्ष ~~मुख्यतः~~ मुख्यतः मांसपेशियों व आंगिक गतियों से सम्बन्धित होता है।

कौशल को छः स्तरों में बाँटा गया है

(I) उत्तेजना
(II) क्रियान्वयन
(III) नियंत्रण
(IV) समायोजना
(V) स्वभावीकरण
(VI) कौशल